राजस्य विभाग

युव जागीर

विनांच 9 मई, 1994

क्रमांक 2341—ज-2-94/8963.—श्री हजारी लाल लाम्बा, पुत श्री ठाकुर बास लाम्बा, निवासी 5355/4 पंजाबी मौहल्ला, सदर बजार, प्रम्वाला छावनी, जिला श्रम्बाला को पूर्वी पंजाब युद्ध पुरस्कार श्रिधिनियम, 1948 की धारा 2(ए) (१ए) तथा 3 (१ए) के श्रधीन सरकार की श्रिधसूचना क्रमांक 4037—र-(III)-70/14674, दिनांक 2 जुलाई, 1970 द्वारा 100 रुपये वार्षिक श्रीर बाद में श्रिधसूचना क्रमांक 5041-श्रार-III-70/29505, दिनांक 8 दिसम्बर, 1970 द्वारा 150 रुपये ग्रीर उसके बाद श्रिधसूचना क्रमांक 1789-ज-1-79/44040, दिनांक 30 श्रक्तूबर, 1979 द्वारा 150 रुपये से बढ़ा कर 300 रुपये दार्षिक की दर से जागीर संजूर की गईथी।

2. अब श्री हजारी लाल लाम्बा की दिनांक 13 दिसम्बर, 1992 को हुई मृत्यु के परिणाम स्वरूप हरियाणा के राज्यपाल ् उपरोक्त अधिनियम (जैसा कि उसे हरियाणा राज्य में अपनाया गया है और उसमें आज तक संशोधन किया गया है) की झारा 4 के अधीन प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, इस जागीर को श्री हजारी लाल लाम्बा की विधवा श्रीमती कर्मावाली के नाम खरीफ 1993 से 1,000 रुपये वार्षिक की दर से, सनद में दी गई शतों के अल्डोंस तबदील करते हैं।

कमांक 1147—अ-2-94/8967.—श्री भगवान सिंह दिह्या, पुत्र श्री खेम चन्द दिह्या, निवासी गांव नाहरी, तहसील सोनीपत, जिला रोहतक भव सोनीपत को पूर्वी पंजाब युद्ध पुरस्कार मधिनियम, 1948 की छारा 2(ए) (1) तथा 3(1)(ए) के भधीन सरकार की भधिसूचना कमांक 4621-भार-4-67/3544, दिनांक 4 अक्तूबर, 1967 द्वारा 100 रुपये वादिक भौर बाद में भिस्चना कमांक 5041-भार-III-70/29505, दिनांक 8 दिस्वर, 1970 द्वारा 150 रुपये भौर उसके बाद मधिसूचना कमांक 1789—अ— I-79/44040, दिनांक 30 अक्तूबर, 1979 द्वारा 150 रुपये से बढ़ाकर 300 रुपये वादिक की दर से जागीर मंजूर की गई थी।

2. अब श्री भगवान सिंह देहिया की दिनांक 26 नवस्वर, 1993 को हुई मृत्यु के परिणाम स्वरूप, हरियाणा के राज्यपाल, उपरोक्त अधिनियम (जैसा कि उसे हरियाणा राज्य में अपनाया गया है और उसमें आज तक संशोधन किया गया है) को धारा 4 के अधीन प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, इस जागीर को श्री भगवान सिंह दहिया की विधवा श्रीमती खंजानी दहिया के नाम खरीफ, 1994 से 1,000 क्यमें वार्षिक की दर से, सनद में दी गई शर्तों के अन्तर्गत तबदील करते हैं।

, क्रमांक 516-ज-2-94/8971.—श्री दया नन्द, पुत श्री चुग लाल, निवासी गांव रूखी, तहसील गोहाना, जिला सोनीपत, को पूर्वी पंजाब युद्ध पुरुक्कार अधिनिषम, 1948 की धारा 2(ए)(1) तथा 3 (1) के प्रधीन सरकार की प्रधिसूचना क्रमांक 966-ज-2-74/15307, दिनांक 31 मई, 1974 द्वारा 150 रुपये और उसके बाद प्रधिसूचना क्रमांक 1789-ज-1-79/44040, दिनांक 30 पक्तूबर, 1979 द्वारा 150 रुपये से बढ़ाकर 300 रुपये वार्षिक की दर से जागीर नंजूर की गई थी।

2. अब श्री दयानन्द की विनांक 22 अक्तूदर, 1993 को हुई मृत्यु के परिणामस्त्रक्य द्वरियाणा के राज्यकाल, उपरोक्त अधिनियम (जैसा कि उसे द्वरियाणा राज्य में अपनाया गया है और उसमें आज तक संशोधन किया गया है) की धारा 4 के अधीन प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, इस जागीर को श्री दयानन्द की विधवा श्रीमती कस्तूरी देवी के नाम खरीफ, 1994 से 1,000 इपये वाधिक की दर से, सनद में दी गई शतों के अन्तर्गत तक्षवील करते हैं।

कमांक 1090-ज-2-94/8975.— पूर्वी पंजाब युद्ध पृष्ट्रकार प्रधिनियम, 1948 (जैसा कि उसे हरियाणा राज्य में प्रपनाया गया है घीर उसमें भाज तक संकोधन किया गया है) की धारा 2(ए) (१ए) तथा :(.ए) के प्रनुसार सौंपे गरे अधिकारों का प्रशैण करने हुए हरियाणा के राज्यवाल मेजर मान सिंह हंजरा, पुत्र श्री जवाहर सिंह, निवासी मकान नं० 870, वार्ड नं० 3 पानीयन, जिला पानीयत को रबी 1973 से खरीफ 1979 तक 150 रुपये वाष्कि तथा रबी, 1980 से खरीफ 1992 तक 300 हाने वाष्कि तथा रबी, 1993 से 1,000 रुपये वाष्कि सनद में दी गई शतों के प्रमुसरण सहबं प्रदान करते हैं।